प्रारम्भिक कलीसिया चंदा इतनी उदारता से क्यों देती थी

प्रारम्भिक कलीसिया पर विचार करने पर, हमें उसकी कई विशेषताएं मिलती हैं जो हमें बहुत ही प्रभावित करती हैं। हम उन लोगों के जोश और तेजी से विकास, अपने प्रभु के प्रति उनकी वफ़ादारी, प्रेरितों की शिक्षा में बने रहने और दूसरे बहुत से गुणों से प्रभावित होते हैं।

उनकी सबसे अधिक सराहनीय विशेषताओं में से एक अपनी भौतिक सम्पत्ति के साथ उदारता थी। वे चंदा न तो कुढ़-कुढ़ कर और न ही मजबूरी के कारण देते थे। उन पर कोई कर नहीं लगाया गया था। न ही वे लोगों को दिखाने के लिए चंदा देते थे। हम जानते हैं कि चंदा देने में उनका कोई स्वार्थ नहीं था, क्योंकि आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लेखकों ने उनकी उदारता की बड़े अच्छे शब्दों में सराहना की है। यरूशलेम के मसीही लोग अपनी सम्पत्तियां बेचकर उनसे मिला धन जरूरतमंद लोगों में बांटने के लिए लाते थे (प्रेरितों 4:34, 35)। पौलुस ने फिलिप्पियों और मकिदूनिया के दूसरे लोगों की उदारता के विषय में लिखा (फिलिप्पियों 4:14, 15; 2 कुरिन्थियों 8:1-4)।

पहली शताब्दी के मसीहियों का उदार हृदय से चंदा देना दूसरों के साथ सुसमाचार को बांटने में उनकी आश्चर्यजनक सफलता का एक कारण था। संसार में सुसमाचार का प्रचार करना और जरूरतमंद मसीही लोगों की देखभाल करना ऐसे कार्य थे जिनके लिए उदारता से चंदा देना आवश्यक था, और मसीही लोगों के उपकार से ये सभी कार्य सम्भव हो पाए।

वे चंदा देने में इतने उदार क्यों थे? चंदा देने के योग्य होने के लिए लोग अपनी सम्पत्ति बेचने के लिए तैयार क्यों थे? शायद पहली शताब्दी की उदारता के कारणों के अध्ययन से हमें यह तय करने में सहायता मिलेगी कि इस शताब्दी की कलीसिया उतनी उदारता से चंदा क्यों नहीं देती।

उन्होंने अपने आपको दे दिया

उनके चंदा देने की एक मुख्य बात 2 कुरिन्थियों 8:5 में मिलती है: ''... उन्होंने प्रभु को, ... अपने तईं दे दिया''। अर्थात वे सचमुच बदल गए थे। उन्होंने महसूस किया कि मन परिवर्तन का अर्थ जो कुछ कोई है और जो कुछ उसके पास है वह सब देना है। ये लोग कलीसिया नाममात्र के सदस्य नहीं थे। वे मन से कलीसिया के सदस्य थे। उनका व्यवहार ''प्रभु, मैं अपना आप तुझे सौंपता हूं'' वाला था। जब कोई व्यक्ति सच्चे मन से प्रभु में परिवर्तित होता है, तो भौतिक सम्पत्तियों के पवित्र होने की बात कठिन नहीं लगती। आज बहुत से लोगों के कंजूस और लालची होने का कारण यह है कि उन्होंने अपने आपको पूरी तरह से मसीह के कार्य के लिए ही समर्पित नहीं किया। हमें सीखने की आवश्यकता है कि मन परिवर्तन में समय, योग्यताओं, अपने आप और सम्पत्तियों का परमेश्वर के पास पवित्र होना आवश्यक है।

उनकी पृष्ठभूमि उदारता वाली थी

प्रारम्भिक मसीही एक ऐसे समुदाय से निकले थे जो उदारता का संचालन करने वाला था। यरूशलेम की कलीसिया में यहूदी लोग थे, जिनका इतिहास उदारता से चन्दा देने वालों का था। वेदी के लिए इस्राएल द्वारा लाए गए उपहारों और इसके समर्पण के समय उनकी भेंटों को स्मरण कीजिए। मन्दिर के लिए दाऊद के उपहारों, मन्दिर की मरम्मत के लिए लाए गए उपहारों, और मन्दिर को फिर से बनाने के लिए चंदे पर विचार कीजिए। पुराने नियम के ये उदाहरण हम में से बहुतों को शर्मिंदा करते हैं।

यहूदी मत के अधीन यहूदियों के दशमांश, भेंटें, उपहार और बलिदान काफी प्रसिद्ध हैं। कुल चंदा उनकी आमदनी का काफी बड़ा भाग होता था। मसीहियत में परिवर्तित होने के समय उनके लिए उदारता से चंदा देना स्वाभाविक ही था। यह सत्य है कि, मसीह के अधीन उन्हें यह फैसला लेने की स्वतन्त्रता थी कि कितना देना है; परन्तु उन्होंने इस स्वतन्त्रता को लोभ के चोगे के लिए इस्तेमाल नहीं किया था। क्या उन्होंने उससे कम दिया जितना वे यहूदी मत में रहते समय दिया करते थे?

इस विषय पर और शिक्षा अर्थात जानकारी की आवश्यकता है। बाइबल में इस विषय पर कलीसिया में ज़ोर दिए जाने वाले अन्य विषयों से अधिक कहने के लिए सत्य को स्पष्ट सिखाने की असफलता और ज़बरदस्ती मसीही उदारता का अच्छा कारण नहीं है।

उन्होंने भण्डारीपन के सिद्धांत को समझना

पहली शताब्दी के मसीहियों ने भण्डारीपन के सिद्धांत को समझना था। वे समझ गए थे कि उनकी सम्पत्तियां उनकी अपनी नहीं हैं, बल्कि वे तो किसी दूसरे की सम्पत्ति को सम्भालने के लिए केवल भण्डारी हैं। वे जानते थे कि उन्हें हिसाब देना पड़ेगा कि उन्होंने इस धन का इस्तेमाल कैसे किया; सो, निश्चय ही वे इसका इस्तेमाल सावधानी से करते थे।

बाइबल के बहुत से पद ईश्वरीय स्वामित्व की शिक्षा देते हैं। उदाहरण के लिए,

निर्गमन 19:5 कहता है, ''समस्त पृथ्वी तो मेरी है।'' (अन्य पद हैं व्यवस्थाविवरण 10:14; भजन 24:1; 1 कुरिन्थियों 10:26.) इसी प्रकार, मानवीय भण्डारीपन के बारे में सिखाया गया है। हमें ''परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारी'' (1 पतरस 4:10) बनने के लिए कहा गया है। पौलुस ने ज़ोर देकर कहा है कि हमारे शरीर भी अपने नहीं हैं (1 कुरिन्थियों 6:19)। जब हमें यह अहसास हो जाता है कि हम किसी और के सामान की सम्भाल कर रहे हैं, तो हम निश्चय ही इसका इस्तेमाल करने में सावधान रहेंगे। हम इसका इस्तेमाल कैसे करते हैं, इसका हमें उत्तर देना पड़ेगा।

उन्होंने परमेश्वर के प्रेम के उत्तर में दान दिया

प्रारम्भिक चेले उदारता से चंदा देते थे क्योंकि वे क्रूस की छाया में रहते थे। उनमें से कई तो कलवरी की घटनाओं के चश्मदीद गवाह थे। उन्होंने परमेश्वर के प्रेम और उसकी उदारता के चरम को देखा था। उन्हें अहसास हो गया था कि परमेश्वर ने ''इतना प्रेम किया'' और इसका उन्हें प्रमाण भी मिल गया था, क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि उसने कैसे ''दिया'' (देखिए यूहन्ना 3:16)। उन्होंने परमेश्वर से प्रेम किया क्योंकि ''पहले उसने प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:19), इसलिए उनके लिए चन्दा देना कठिन नहीं था।

सारांश

हम कलवरी से कई शताब्दियां दूर हैं, परन्तु जो घट चुका है उसे समय मिटा नहीं सकता। आज चंदा देने में उदारता की कमी का एक बहुत बड़ा कारण क्रूस के महत्व को समझने में असफल होना है। परमेश्वर ने हम से ''ऐसा प्रेम रखा'' कि उसने हमारे लिए अपना पुत्र ही दे दिया (यूहन्ना 3:16; देखिए इफिसियों 5:25)। इस बात को स्मरण करने से हमारे मनों में परमेश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाएगा। इस प्रेम को हम उसी उदारता से दिखा पाएंगे जैसे परमेश्वर ने अपना पुत्र देकर अपना प्रेम दिखाया।